REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 8 | ISSUE - 3 | DECEMBER - 2018

नवजागरण आंदोलन और हिंदी साहित्य

डॉ. राजेन्द्र खैरनार
अध्यक्ष, हिंदी विभाग, कला, विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय,
विद्यानगरी, बारामती, जि. पुणे (महाराष्ट्र),

यूरोप में जिसे रेनेसान्स (Renaissance) कहा गया है उसे हिंदी में नवजागरण कहा जाता है। रेनेसान्स के लिए नवजागरण यह संज्ञा प्रसिद्ध विद्वान डॉ. रामविलास शर्मा जी ने दी है। उन्होंने भारतीय नवजागरण और यूरोप, भारतीय संस्कृति और हिंदी प्रदेश, भारतेंदु हरिश्चंद्र और हिंदी नवजागरण की समस्याएँ, महावीर प्रसाद द्विवेदी और हिंदी नवजागरण आदि ग्रंथों में हिंदी नवजागरण पर विस्तार से चिंतन प्रस्तुत करते हुए हिंदी नवजागरण को एक ऐतिहासिक, सांस्कृतिक घटना बताई है। रामविलास शर्मा जी ने हिंदी नवजागरण पर जो कुछ भी कहा है उस पर सहमति, असमहति, खंडन-मंडन आज भी जारी है। कुछ लोग यह स्वीकार करते हैं कि आधुनिक काल में अंग्रेजों के आने के बाद हिंदी क्षेत्र में नवजागरण की लहर आई और उसके साथ ही आधुनिक विचारधारा भी आई। कुछ विद्वान नवजागरण को भक्तिकाल तक पीछे ले जाते हैं । कुछ विद्वान इसे अंग्रेजों की देन मानते हैं तो कुछ विद्वान इसे भारतीय मिट्टी की उपज करार देते हैं। यानी नवजागरण आज भी एक चिंतन का विषय है। इसी चिंतन प्रक्रिया से आज हम गुजर रहे हैं ।

1.1 नवजागरण का आरंभ

यूरोप में रेनेसान्स तेरहवीं-चौदहवीं सदी में आया और सबसे पहले इटली में आया। वहाँ धार्मिक और सांस्कृतिक क्षेत्र में परिवर्तन की लहर आई। लोगों ने धर्म और ईश्वर के डर को दूर फेकना शुरु किया। तर्काधारित सवाल किए जाने लगे। जीवन पद्धति में बदलाव आया, सोच बदली। कला और विज्ञान की नयी साधना का आरंभ हुआ। यह एक बौद्धिक आंदोलन था। मध्ययुगीन मानसिकता के खिलाफ लढ़ा गया बौद्धिक आंदोलन। सबसे पहले इटली में नवजागरण आरंभ हुआ और बाद में सारे यूरोप में फैल गया। लगभग दो सौ वर्षों तक वहाँ नवजागरण की यह लहर चलती रहीं। भारत के संदर्भ में हम देखते हैं कि नवजागरण उन्नीसवीं सदी की देन है। अंग्रेजों की सत्ता पूरी तरह से स्थापित होने के बाद भारत में नवजागरण का युग आरंभ होता है। अंग्रेज सर्व प्रथम आए बंगाल में। सन 1756 के प्लासी युद्ध के बाद बंगाल का नवाब सिराजुद्दौला पराजित हुआ और अंग्रेजों की सत्ता स्थापित हुई। इसलिए भारत में नवजागरण का आरंभ सर्वप्रथम बंगाल में हुआ। उसके बाद महाराष्ट्र में नवजागरण का युग आरंभ होता है। महाराष्ट्र में 1818 ई. में पेशवाओं की पराजय हुई और उसके साथ ही संपूर्ण देश में अंग्रेजी राज शुरु हुआ। इसलिए महाराष्ट्र में 1818 ई. के बाद नवजागरण माना जाता है। हिंदी प्रदेश में अब भी सामंती ताकतें जीवित थीं । 1857 ई. का उठाव उसी का परिणाम कहा जाएगा। यह विद्रोह अंग्रेजों ने नष्ट किया और सामंती व्यवस्था ने अंतीम साँस ली। इसलिए रामविलास शर्मा जी हिंदी नवजागरण का आरंभ 1857 ई. के युद्ध से मानते हैं। उनकी दृष्टि से नवजागरण का यह पहला दौर था। दूसरा दौर भारतेंदु जी के साथ शुरु होता है जिसे वे 1900 ई. तक मानते हैं। तिसरा दौर द्विवेदी युग को मानते हैं।

रामविलास शर्मा जी ने हिंदी नवजागरण का जो समय और विभाजन बताया है वह काफी अंतर्विरोधों से भरा है। वैसे पूरा हिंदी नवजागरण आंदोलन अंतर्विरोधों से भरा है। और इसलिए भी नवजागरण को लेकर आज भी चिंतन जारी है, खंडन-मंडन जारी है।

नवजागरण का अर्थ है मध्ययुग की मानसिकता से मुक्ति पाना। मध्ययुग की मानसिकता का अर्थ है परंपरा, संस्कार और धर्म के नाम पर पुरानी रुढ़ियों में जिना, भावनिकता पर जोर, नवीन और तर्काधारित विचारों का विरोध, स्त्री शिक्षा का विरोध, सती प्रथा महिमा मंडन, स्त्रियों का अनादर, दलितों का शोषण, समता का अभाव, संकुचित राष्ट्रीयता, आदि बातें मध्ययुगीन मानसिकता के लक्षण हैं। नवजागरण इसके खिलाफ बुद्धिजीवियों की लढ़ाई थी। नवजागरण नए विचारों को स्वीकार करने का आंदोलन था। पुरानी मानसिकता से बाहर आकर आधुनिक मानसिकता में प्रवेश करने का नाम नवजागरण था। 'संक्षेप में सामंतवाद और धार्मिक सत्ता के कठोर नियंत्रण में से मुक्ति, व्यक्तिवाद, भोतिकवाद, वैज्ञानिक जिज्ञासा, सचेत रूप से समाज सुधार के लिए प्रयास, बुद्धिवाद, प्रशासनिक, न्यायिक सुधार, नवीन जीवन शैली, नयी संस्कृति और एक नयी दुनिया की ओर प्रयाण आदि नवजागरण की सामान्य विशेषताएँ हैं।'[1] नवजागरण से पहले हम अज्ञान के अंधकार में डूबे हुए थे। स्वर्ग, नरक और ईश्वर के चक्कर में फँसे थे। हमने ज्ञान को नहीं, आडंबरों को महत्व दिया। वही हमारे लिए जीवन हो गया। वही धर्म हो गया। इसलिए धर्म और ईश्वर के नाम पर आडंबर ही बचे थे। कभी कबीर, रविदास, नानक आदि संतों ने इसके खिलाफ आवाज उठाई थी। परंतु वह आवाज भूला दी गई। इस मध्ययुग की मानसिकता से हम तब बाहर आए जब इस देश में अंग्रेज आए। यह एक दिन में नहीं हुआ, इसे कई वर्ष लगें। यों कहिए, नवजागरण की प्रक्रिया आज भी जारी है।

1.2 भारत में नवजागरण

भारत में नवजागरण का आरंभ अंग्रेजी सत्ता के साथ आरंभ हुआ। अंग्रेजों से पहले भारत मध्ययुग की मानसिकता में जी रहा था। यानी नवजागरण का आरंभ होने में निश्चित रूप से अंग्रेजों का योगदान रहा है। इस सत्य को खुले दिल से स्वीकारने की आवश्यकता है। जो जो अंग्रेजों का दिया है वह सब बुरा है यह कहना गलत होगा। भारत में अंग्रेज जहाँ पहले पहुँचे वहाँ आधुनिक सभ्यता पहले पहुँची है। इसलिए नवजागरण भी पहले वहीं से आरंभ हुआ। उदाहरण बंगाल का है। बंगाल में अंग्रेजों की सत्ता प्लासी युद्ध (1757) के बाद स्थापित हुई। बंगाल के नवाब सिराजुद्दौला और ईस्ट इंडिया कंपनी के बीच 1757 ई. में घनघोर संघर्ष हुआ । अंग्रेज विजयी हुए। अंग्रेजों की सत्ता स्थापित हुई। उसके बाद यानी 1757 से ही बंगाल में नवजागरण का युग शुरु हो जाता है। जहाँ अंग्रेजी सत्ता देर से स्थापित हुई वहाँ नवजागरण भी देर से पहुँचा। उदाहरण हिंदी क्षेत्र का है। ऐसा क्यों हुआ ? इसका अर्थ ही यह है कि हम माने या न माने हमारे देश में नवजागरण अंग्रेजों की देन है। इसीलिए डॉ. बच्चन सिंह कहते हैं, 'इससे ध्वनित होता है कि आधुनिक काल ले आने का श्रेय अंग्रेजी उपनिवेशवाद को है। जिस तरह भक्ति आंदोलन के बारे में प्रश्न उठाया जाता है कि यदि मुसलामान न आये होते तो भक्ति आंदोलन की लहर न उठती, उसी प्रकार कहा जाता है, यदि अंग्रेज न आये होते तो आधुनिक काल न आता। ऐतिहासिक प्रक्रिया के तहत उसे आना ही था। किंतु अंग्रेजी उपनिवेश ने इस प्रक्रिया को तेज कर दिया। अनजाने ही सही, नये परिवर्तन का श्रेय उसी को दिया जाता है।'[2] अर्थात यहाँ यह स्पष्ट होता है कि अंग्रेजों ने इस देश में जो कुछ परिवर्तन लाया था, उसे हम नकार नहीं सकते। रेल्वे, तार-डाक तथा आधुनिक शिक्षा आदि सेवाएँ उन्होंने भले ही अपने फायदे के लिए शुरु की हो, पर उसका असर भारतीयों पर पड़ा ही। उसी बात की ओर बच्चन जी दिशा निर्देश करते हैं।

1.3 हिंदी नवजागरण

अंग्रेजों ने चाहे जिस उद्देश्य से अंग्रेजी शिक्षा आरंभ की हो, परंतु उससे भारतीयों को नयी दुनिया का, नए ज्ञान का पता तो चल ही गया। अंग्रेजी शिक्षा से भारतीयों की आँखें खुलीं। अपनी सद्य स्थिति का हमें ज्ञान हुआ। अपनी मध्ययुगीन मानसिकता और जीवन पद्धति का अहसास हुआ। यह आश्चर्य की बात नहीं कि नवजागरण के अग्रदूत राजा राममोहन राय के साथ नवजागरण के जितने भी महापुरुष थे- महात्मा फुले, महादेव गोविंद रानडे आदि सभी अंग्रेजी शिक्षा में पढ़े-लिखें थे। अंग्रेजी शिक्षा से हमारी विचार-परंपरा, हमारे व्यवहार, हमारे संस्कार आदि पर बौद्धिकता के साथ सोचा जाने लगा। गलत परंपराओं पर, संस्कारों पर सवाल उठने लगे। वर्ण व्यवस्था पर सवाल उठे। स्त्रियों की स्थिति पर सवाल उठे। सती प्रथा, बाल-विवाह, बहु विवाह का विरोध होने लगा। विधवाओं के प्रति नयी दृष्टि से सोचा जाने लगा। अंधविश्वास, धार्मिक संकीर्णता आदि पर खुलकर चर्चा होने लगी। साथ ही साथ हम सब भारतीय हैं, भारत हम सब का देश है, हम सभी भाई-भाई हैं, यह राष्ट्रीयता की भावना जन्म लेने लगी। प्रेस और समाचार पत्रों के कारण विचार-स्वातंत्र्य की नींव पड़ी। विविधता में एक होने का सूत्र मिला। अन्यथा इस देश के प्रत्येक प्रांत में अलग संस्कृति, अलग भाषा, अलग मान्यताएँ, धर्म अलग। एकता का कोई सूत्र नहीं था जो अंग्रेजों ने ही हमें दिया कि हम इस देश के नागरिक हैं। देश हमारा है और अंग्रेज तो आक्रमणकारी हैं। राजकीय गुलामी के प्रति हम सजग होने लगे। इसलिए यह सही है कि हिंदी प्रदेश में नवजागरण आया वह राष्ट्रीयता के साथ आया।

जो भी हो नवजागरण आंदोलन का एक ऐतिहासिक महत्व है। यह महत्व रेखांकित करते हुए डॉ. हितेंद्र पटेल अपने एक लेख- इतिहासकार की दृष्टि में नवजागरण काल- में लिखते हैं- 'भारतीय नवजागरण ने देश को आधुनिक बनाया, सजग बनाया, अपनी परंपरा को देखना सिखाया, इतिहास के प्रति सचेत किया, भाषा को आधुनिक बनाया, समाज के प्रति व्यक्ति को सजग बनाया और इसी कारण आधुनिक मन से हम भारतीयों ने अंग्रेजों से सीखकर उन्हीं की भाषा में उनसे संघर्ष किया और अंततः यह दिखा दिया कि वे अंग्रेजों से किसी भी तरह कम नहीं है।'[3] नवजागरण की लढ़ाई आधुनिकता के लिए थी। मध्ययुगीन मानसिकता से मुक्ति पाने का यह संघर्ष था। नवजागरण का एकदम से कहीं भी स्वागत नहीं हुआ। विरोध ही हुआ। परंतु इसे नवजागरण के दूतों ने चलाया। विद्वानों के अनुसार, 'नवजागरण का महत्व मूलतः इस अर्थ में है कि यह आधुनिकीकरण का हिस्सा है और उसके कारण समाज मध्ययुगीन मूल्यबोधों से हटकर आधुनिक मूल्यबोधों से आ जुड़ता है और एक सभ्य समाज की निर्मिति होती है। ... भारतीय संदर्भ में नवजागरण का अर्थ है अंग्रेज (यानी आधुनिक यूरोपीय) शक्ति के साहयचर्य से उत्पन्न एक सकारात्मक प्रभाव जिसने भारत जैसे देश को यूरोप जैसा बनने के लिए, सोचने के लिए प्रेरित किया।'[4]

1.4 हिंदी नवजागरण और अंतर्विरोध

डॉ. रामविलास शर्मा जी हिंदी नवजागरण को महिमा मंडित करते हैं। यह सही है कि नवजागरण हुआ और उसका अपना एक महत्व है। परंतु इसकी कमियाँ भी रही हैं। इन कमियों की ओर, अंतर्विरोधों को लेकर वे कुछ नहीं कहते हैं। जैसा कि रामविलास शर्मा जी जताना चाहते हैं, वैसा अगर हिंदी नवजागरण अत्यंत भव्य रहा है, तो फिर आज भी हिंदी क्षेत्र आधुनिकता में पीछे क्यों है ? अन्य प्रांतों की तुलना में यहाँ आज भी स्त्री और दलित उपेक्षित क्यों हैं ? बौद्धिकता का अभाव क्यों है ? रामविलास जी के अनुसार यह नवजागरण 1930 ई. तक चला। परंतु 1930 ई. के बाद प्रकाशित डॉ. रामचंद्र शुक्ल द्वारा लिखित 'हिंदी साहित्य का इतिहास' इस ग्रंथ पर इतने सवाल क्यों उठते हैं ? क्यों उन्होंने कबीर की उपेक्षा की ? आधुनिक दृष्टि से उन्होंने इतिहास लिखा होता तो न बच्चन सिंह जी को 'हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास' लिखना पड़ता और न सुमन राजे को 'हिंदी साहित्य का आधा इतिहास' लिखना पड़ता। इसका अर्थ यही है कि यह

नवजागरण वैसा नहीं था जैसा डॉ. रामविलास शर्मा जी इसे बताते हैं। उन्होंने इसे महिमा मंडित कर आलोचनाओं से बचा लिया। परंतु यह बहुत दिन तक चलने वाला नहीं था। आज शर्मा जी के चिंतन पर अनेक विद्वान सवाल उठा रहे हैं। डॉ. नामवर सिंह जी अपने एक निबंध 'हिंदी आलोचना की परंपरा' में कहते हैं, 'रामविलास जी ने उन्नीसवीं शताब्दी के हिंदी नवजागरण की जो अत्यंत चिकनी-चुपड़ी और गौरवशाली अवधारणा हमें दी है, वह उतनी सुहावनी नहीं है, उतनी क्रांतिकारी नहीं है। उस दौर में कई कमजोरियाँ थीं। इधर जैसे-जैसे उन कमजोरियों से संबंधित शोधपूर्ण अध्ययन सामने आ रहे हैं, वैस-वैसे पता लग रहा है कि नवजागरण के जिस क्रांतिकारी तेवर पर हम मुग्ध हैं, वह किसी हद तक हमारे अल्पज्ञान का भी सूचक है।'[5]

सन 1857 के विद्रोह के बाद हिंदी क्षेत्र में अंग्रेजी शिक्षा आरंभ हुई। उसके साथ ही नवजागरण भी आरंभ हुआ। नवजागरण का यह काल 1930 तक माना जाता है। इस काल सीमा को लेकर विद्वानों में मतभेद है। 1930 ई. के बाद आजादी की लड़ाई तेज हो गई और नवजागरण का आंदोलन धीमा पड़ गया। यहाँ भी महाराष्ट्र और बंगाल का अनुभव कुछ अलग है। वहाँ नवजागरण का आंदोलन बाद में भी तेज गति से चलता रहा। हिंदी प्रदेश ने नवजागरण को अधिक महत्व नहीं दिया। नवजागरण वहाँ आया भी तो साहित्य और राष्ट्रीय आंदोलन के साथ। इसलिए यह इतना असरदार भी नहीं रहा जितना की भारत के अन्य राज्यों में असरदार रहा। एक और कारण रहा है। हिंदी क्षेत्र को छोड़कर नवजागरण का आंदोलन सीधे-सीधे ब्राह्मणवाद के खिलाफ चला, सनातनी परंपराओं के खिलाफ चला और स्त्रियों और दलितों को साथ लेकर चला। यह बात हिंदी नवजागरण में गायब है। इसलिए डॉ. रामविला शर्मा जी चाहे जितना हिंदी नवजागरण का उदात्तीकरण करते रहे हों, पर वास्तविकता कुछ और ही है।

1.5 हिंदी नवजागरण और राष्ट्रीय आंदोलन

हिंदी नवजागरण पर विचार करते समय एक तथ्य सामने आता है और वह यह कि हिंदी प्रदेश में नवजागरण की अपेक्षा राष्ट्रीय आंदोलन को अधिक महत्व मिला। राष्ट्रीय आंदोलन को वहाँ के सामंतों ने भी समर्थन दिया। वे राष्ट्रीय आंदोलन में उतरे या छुपकर समर्थन देते रहें। परंतु ऐसा समर्थन उन्होंने नवजागरण को नहीं दिया। यह सही है कि हम राजकीय गुलाम थे। परंतु उससे पहले इस देश का बहुत बड़ा वर्ग हजारों वर्षों से सामाजिक गुलाम था। शूद्र और स्त्रियाँ अपनी स्वतंत्रता के लिए छटपटा रही थीं। उस गुलामी की ओर कभी हिंदी प्रदेश के धर्म मार्तंडों का, सामंतों का ध्यान नहीं गया। इसलिए तो महात्मा फुले, आगरकर महाराष्ट्र में सर्वप्रथम सामाजिक पुनर्रचना की माँग कर रहें थे। उनके अनुसार पहले सामाजिक सुधार हो फिर राजकीय सुधार हो। हिंदी प्रदेश में राजकीय सुधारों को महत्व मिला और सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक सुधारों का मुद्दा हाशिए पर चला गया जो आज तक वैसा ही है। बंगाल और महाराष्ट्र में ऐसा नहीं हुआ। वहाँ नवजागरण की लहर स्वतंत्र रूप से चली। नवजागरण के चिंतक राष्ट्रीयता से न दूर थे न पास थे। परंतु उनकी प्राथमिकता थी समाज को जागृत करना। धार्मिक और सांस्कृतिक अंधविश्वासों से मुक्ति देना। स्त्री और दलितों को समानता का स्थान देना। कई बार राष्ट्रीयता के प्रचारकों की ओर से इन सुधारणावादी लोगों पर अंग्रेजों का प्रशंसक होने का आरोप किया गया। फिर भी महाराष्ट्र, बंगाल में नवजागरण का आंदोलन स्वतंत्र और प्रभावी रूप से चला। ऐसा हिंदी प्रदेश में नहीं हुआ। शायद यही कारण रहा हो कि नवजागरण का असर हिंदी प्रदेश में उतना नहीं दिखता जितना देश के अन्य प्रांतों में दिखाई देता है। हम अतंर्विरोधों में जी रहे थे, जी रहे हैं। इसीलिए 26 नवंबर, 1949 को डॉ. अंबेडकर जी ने जो बहुत पीड़ा के साथ कहा था, वह आज भी उचित लगता है। उन्होंने कहा था- '26 नवंबर, 1949 को हम अंतर्विरोधों के जीवन में प्रवेश करने जा रहे हैं। राजनीति में समत्व होगा और सामाजिक तथा आर्थिक जीवन में विषमता रहेगी। राजनीति में हम एक व्यक्ति एक वोट और एक वोट एक मूल्य के सिद्धांत को मान्यता देंगे पर सामाजिक और आर्थिक संरचना में हम एक व्यक्ति एक मूल्य का

सिद्धांत स्वीकार नहीं करेंगे। अतंर्विरोधों का यह जीवन हम कब तक जीते रहेंगे ? हम अपने सामाजिक और आर्थिक जीवन में समता से कब तक इंकार करते रहेंगे ?' डॉ. आंबेडकर जी की पीड़ा और चिंता आज भी सही लगती है।

बिना सोचे-समझे, बिना विचार किए राजा राममोहन राय, महात्मा फुले आदि को अंग्रेजों का समर्थक कहना गलत होगा। अंग्रेजों ने यहाँ स्कूल खोलें, कॉलेज खोलें, प्रेस खोलें। पाश्चात्य ज्ञान के द्वार खोलें। उन्होंने हमें यह एहसास कराया कि हमारी परंपराएँ, संकीर्णता, हमें सभ्य नहीं बनने देगी। हम आधुनिकता से कोसों दूर हैं। आधुनिकता का मतलब हमें अंग्रेजों ने बताया। हम तो वर्ण व्यवस्था और जातियों में बटे थे। शूद्रों को सवर्णों ने पास नहीं आने दिया। वही अंग्रेजों ने शूद्रों को अपने घरों में आने की इजाजत दी। नौकरियाँ दी। सेना में भर्ती कराया। अंग्रेज अपनी स्त्रियों को सम्मान देते थे। समानता का दर्जा देते थे। वह भी हमने देखा। और तभी हमारे विचार चक्र आरंभ हुए। हम जिस सामंतवादी मानसिकता में जी रहें थे, क्या अंग्रेज नहीं आते तो अगले सौ वर्षों तक हमारे देश में नवजागरण आता ? हम बदलते ? हमारा साहित्य बदलता ? अंग्रेज आए इसीलिए यह सब कम से कम उन्नीसवीं सदी में हुआ। उसी अंग्रेजी विद्या से हमारे देश में राष्ट्रीयता भी आई। नवजागरण हमें राष्ट्रीयता तक ले आया। राष्ट्रीय आंदोलन ने हमें आजीदी दिलाई। अतः अंग्रेजों को इस संदर्भ में धन्यवाद क्यों न दें ?

बंगाल में राजा राममोहन राय, ईश्वरचंद्र विद्यासागर पैदा हुए, महाराष्ट्र में महात्मा फुले, गुजरात में दयानंद सरस्वती, केरल में नारायण गुरु, तमिलनाडु में पेरियार ई. व्ही. रामस्वामी चिंतक आगे आए। परंतु हिंदी क्षेत्र में इस तरह का कोई बड़ा चिंतक हमें नहीं दिखता। इसका क्या कारण हो सकता है ? प्रेमकुमार मणि कहते हैं, 'हिंदी क्षेत्र में कोई बड़ा विचारक, लेखक, वैज्ञानिक पैदा नहीं होता तब इसके मूल में हमारी सामाजिक रूढ़िवादिता है जिसमें एक जबरदस्त बदलाव की जरूरत है।'[6] क्या कारण है कि नवजागरण के दूत 1857 के विद्रोह की भर्त्सना करते हैं और अंग्रेजों की विजय को सही करार देते हैं। बंगाल में देवेंद्रनाथ ठाकुर सहित अनेक नवजागरण के बुद्धिजीवियों ने बंगला पत्रों में सन 1857 की क्रांति के विरोध में खुलकर लेख लिखे और क्रांति की तीखी भर्त्सना की।[7] उसका कारण यह है कि नवजागरण के सुधारक यह मानते हैं कि यह सन 1857 की लढ़ाई सामंतवाद की लड़ाई थी। अंग्रेजों ने सामंतवाद को समाप्त किया। इस सामंतवाद ने दलितों, स्त्रियों को दबा के रखा था। सामंतवाद की सोच संकीर्ण थी। अंधविश्वास और आडंबर से परिपूर्ण जीवन था। सती प्रथा, बहु विवाह, बाल विवाह प्रचलित और प्रतिष्ठित थे। ऐसे सामंतवाद का साथ नवजागरण के दूत क्यों करते ? इसलिए इन विद्वानों ने सन 1857 की अंग्रेजों की जीत पर सवाल नहीं उठाएँ। अंग्रेजों को वे धन्यवाद देते हैं कि उन्होंने भारतीयों को आधुनिकता का परिचय कराया। इसका अर्थ यह नहीं कि नवजागरण के दूत राष्ट्रीयता के खिलाफ थे। महाराष्ट्र में महात्मा फुले ने वैचारिक मतभेद के बावजूद अपने अनुयायी नारायण मेघाजी लोखंडे जी के द्वारा 26 अक्तूबर 1882 को तिलक का सत्कार किया था। उन्होंने ही राजा शिवाजी का जन्मोत्सव आरंभ किया। अंग्रेजी शिक्षा का समर्थन किया पर अंग्रेजों की शिक्षा नीति का विरोध किया। यह सब हुआ क्योंकि सामंतवाद का खात्मा हुआ। और रामविलास शर्मा जी सन 1857 की लढ़ाई को ही नवजागरण का पहला दौर मानते हैं। वे कहते हैं, '1857 का संग्राम हमारा जातीय संग्राम है और वह भारत का राष्ट्रीय संग्राम भी है। उसका असर सारे देश पर हुआ, हिंदी भाषी प्रदेश पर सबसे ज्यादा हुआ।'[8]

1.6 हिंदी नवजागरण और भारतेंदु युग

हिंदी क्षेत्र में नवजागरण के दूत थे भारतेंदु जी। आधुनिक विचारों से युक्त उनका व्यक्तित्व एवं कार्य हिंदी साहित्य को प्रभावित करता है। हिंदी भाषा और साहित्य को नई दिशा देने का ऐतिहासिक कार्य उन्होंने किया है। उनका जीवन काल है 1850 ई. से 1885 ई. तक। मात्र पैंतीस वर्ष के जीवन काल में भारतेंदु जी ने जो हिंदी की जो सेवा की है वह अद्वितीय है। इसलिए इतिहासकार हिंदी साहित्य के 1850 ई. से 1900 ई. तक के काल को भारतेंदु काल नाम देते हैं। परंतु यहाँ एक

तर्क उभरता है। क्या भारतेंदु जी ने जन्म लेते ही हिंदी साहित्य को प्रभावित करना शुरु कर दिया था ? ऐसा तो कभी संभव नहीं हो सकता। ऐसी अपेक्षा रखना केवल अध्यात्म के क्षेत्र में संभव है। आधुनिक विचारों से युक्त भारतेंदु जी के संदर्भ में ऐसी अपेक्षा रखना गलत है, तर्क हीन है। अतः क्यों न भारतेंदु काल का आरंभ उनकी प्रथम प्रकाशित रचना से याने सन 1868 से मानें ? उनकी मृत्यु के बाद भी वे हिंदी साहित्य को प्रभावित करते रहें हैं इसमें कोई दोराय नहीं है। इसलिए भारतेंदु काल को 1868 से 1900 ई. तक मानने में कोई अड़चन नहीं है।

यह वह समय था जब हिंदी प्रदेश एक ओर रीतिकाल की मानसिकता में था तो दूसरी ओर अंग्रेजों की आधुनिकता सामने थी। इस समय भारतेंदुजी ने हिंदी क्षेत्र को आधुनिकता का मार्ग दिखाया। उन्होंने देश की गरीबी, पराधीनता, अकर्मण्यता, स्त्री दास्य का विरोध किया। उन्होंने देश की विविध समस्याओं की ओर जनता का ध्यान आकर्षित किया। मातृभाषा का महत्व पहचाना और मातृभाषा में लिखने-बोलने की प्रेरणा दी-

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।
बिनु निज भाषा ज्ञान के मिटत न हिय को सूल।।

राष्ट्रभाषा हिंदी की प्रतिष्ठा में किसी साहित्यकार द्वारा उठाया गया यह पहला कदम था। उन्होंने हिंदी साहित्य को समृद्ध करने के लिए अनुवाद किए, मौलिक लेखन किया। हरिश्चंद्र पत्रिका, कविवचन सुधा, बाल बोधिनी आदि पत्रिकाओं का संपादन किया। अपने समय के लेखकों को हिंदी में लेखन के लिए प्रेरित-प्रोत्साहित किया। कई सामाजिक संस्थाओं से वे संबंधित थे। सामाजिक एवं साहित्यिक कार्य के लिए धन खर्च किया। कवि, लेखक, संपादक, नाटककार, अनुवादक संगठनकर्ता, सुधारवादी विचारक, प्रेरणादायी व्यक्तित्व आदि कई भूमिकाएँ भारतेंदु जी ने मात्र पैंतीस वर्ष के जीवन काल में निभाई। सचमुच, उनके कार्य को देखकर यकीन हो जाता है कि जिंदगी बड़ी होनी चाहिए, लंबी नहीं।

भारतेंदु जी के समय साहित्यकार भाषा और विचारों को लेकर संभ्रम की स्थिति में थे। क्योंकि परंपरा तब ब्रज भाषा की थी। विचार मध्ययुग के थे। अब परिस्थिति बदली हैं। अंग्रेजी राज में भारत जी रहा था। अतः समय को पहचानना आवश्यक था जो भारतेंदु जी ने किया। उन्होंने अपने समय के साहित्यकारों को ब्रज के मोह से बाहर निकालकर खड़ी बोली की ओर लाने का महत्वपूर्ण कार्य किया। कम से कम गद्य साहित्य के लिए तो वे ऐसा कर सकें। उन्होंने भाषा और साहित्य के लिए जो भूमि तैयार की थी उस पर आगे चलकर महावीर प्रसाद द्विवेदी जी को लहलहाती फसल लेना आसान हुआ। भारतेंदु जी के समय लेखन करनेवाले अन्य साहित्यकार थे- श्रीनिवासदास, बालकृष्ण भट्ट, प्रतापनारायण मिश्र, राधाकृष्णदास, बदरीनारायण चौधरी प्रेमघन, किशोरीलाल गोस्वामी, देवकीनंदन खत्री, राधाचरण गोस्वामी, लज्जाराम शर्मा, श्रद्धाराम फुल्लौरी आदि। ये सभी साहित्यकार भारतेंदु जी के विचारों से प्रभावित थे। इनमें से अधिकतर साहित्यकार पत्रकारिता से जुड़े थे। पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से इन्होंने नवीन विचारों की खेती आरंभ की। हिंदी पाठकों को नई सोच दी। नई दिशा देने का प्रयास किया। अब हम केवल किसी एक प्रांत, एक भाषा का विचार नहीं कर सकते यह भारतेंदु जी समझ चुके थे। उसलिए उन्होंने अपने मंडल के लेखकों को भारतीयता की पहचान का साहित्य लिखने की प्रेरणा दी। स्वयं भारतेंदु जी के साहित्य में भारतीयता की पहचान है, देश भक्ति है, हिंदी की प्रतिष्ठा है। उनका भाषा संबंधी आंदोलन वास्तव में उनके स्वदेशी आंदोलन का अंग था। 23 मार्च, 1874 ई. में कवि वचन सुधा पत्रिका में वे लिखते हैं- 'आज के दिन से कोई विलायती कपड़ा न पहिरेंगे और जो कपड़ा पहिले से मोल ले चुके हैं और आज की मिति तक हमारे पास हैं उनको तो उनके जीर्ण होने तक काम में लावेंगे पर नवीन मोल लेकर किसी भी भांति का भी विलायती कपड़ा न पहिरेंगे, हिंदुस्तान का कपड़ा पहिरेंगे।' गांधी जी के स्वदेशी आंदोलन के बहुत पहले और वह भी मात्र चौबीस वर्ष की अवस्था में भारतेंदु जी ने

स्वदेशी विषयक जो विचार व्यक्त किए हैं, वे हमें आश्चर्यचकित करते हैं । यहाँ पर हमें भारतेंदु जी के प्रभावी व्यक्तित्व के दर्शन होते हैं। इसीलिए उन्हें हिंदी नवजागरण के अग्रदूत कहा जाता है।

संदर्भ-

1. हिंदी आलोचना की पारिभाषिक शब्दावली- संपा. डॉ. अमरनाथ, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण- 2009, पृ. 564
2. हिंदी साहित्य का इतिहास- डॉ. बच्चन सिंह, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण-2009, पृ. 277
3. आजकल, मई 2017, पृ. 12
4. आजकल, मई 2017, पृ. 12
5. आलोचना और विचारधारा- डॉ. नामवर सिंह, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण 2014, पृ. 154
6. आजकल, मई 2017, पृ. 17
7. आजकल, मई 2017, कर्मेंदु शिशिर जी का लेख नवजागरण की अवधारणा से, पृ. 9
8. महावीर प्रसाद द्विवेदी और हिंदी नवजागरण- रामविलास शर्मा, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, पहला संस्करण-1977, दूसरी आवृत्ती-2008, भूमिका से।